http://krishipravahika.vitalbiotech.org/

कृषि प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका

e-ISSN: 2583 – 0430

कृषि-प्रवाहिका: ई-समाचार पत्रिका, (2025) वर्ष 5, अंक 10, 63-65

Article ID:494

फार्म रिकॉर्ड –किसानों के लिए प्रगति का साधन

ललित कुमार वर्मा[1], पुखराज सिंह[2], ओम प्रकाश मौर्य[3], एवं राजाराम यादव[4]

[1]शोधार्थी, कृषि अर्थशास्त्र एवं सांख्यिकी विभाग, आर.एस.एम. (पी.जी.) कॉलिज, धामपुर, बिजनौर (उ.प्र.)

[2]एसोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, कृषि अर्थशास्त्र विभाग, जे.वी. (पी.जी.) कॉलिज, बड़ौत, बागपत, (उ.प्र.)

[3]एसोसिएट प्रोफेसर एवं प्रभारी, कृषि अर्थशास्त्र एवं सांख्यिकी विभाग, आर.एस.एम. (पी.जी.) कॉलिज, धामपुर, बिजनौर (उ.प्र.)

=असिस्टेंट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष, कृषि सांख्यिकी विभाग, जे.वी. (पी.जी.) कॉलिज, बड़ौत, बागपत, (उ.प्र.)

*अनुरूपी लेखक

ललित कुमार वर्मा*

परिचय-

भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का एक प्रमुख स्थान है। यह ग्रामीण परिवारों के लिए आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत है । प्राय : खेती में, किसान बुवाई, उर्वरक, सिंचाई, पौध संरक्षण, कटाई, परिवहन एवं अन्य लागतों के साथ-साथ अपनी उपज से होने वाली आय जैसे अन्य विभिन्न खर्चों का वहन करते हैं। इसलिए, उचित निर्णय लेने के लिए फार्म रिकॉर्ड (कृषि अभिलेख) रखना आवश्यक है; हालाँकि, अधिकांश तौर पर भारत में सीमांत एवं छोटे किसानों के बीच इसे अभी भी ठीक से नहीं अपनाया जाता है।

"खेती में मेहनत जितनी ज़रूरी है, हिसाब-किताब उससे भी ज़्यादा ज़रूरी है।"

खेती केवल मेहनत से नहीं, बल्कि योजना और हिसाब-किताब से भी सफल होती है। एक साधारण किसान डायरी या रिकार्ड-बुक से किसान यह जान सकता है कि उसकी लागत कितनी हुई, किस फसल से कितना लाभ मिला और अगले सीजन में कौन-सी रणनीति अपनानी है।

कृषि अर्थशास्त्र एवं सांख्यिकी विभाग, आर.एस.एम. (पी.जी.) कॉलेज धामपुर, बिजनौर(उ० प्र०), कृषि अर्थशास्त्र विभाग तथा कृषि सांख्यिकी विभाग, जे.वी. (पी.जी.) कॉलेज, बड़ौत, बागपत (उ० प्र०), के परस्पर सहयोग से किसानों में फार्म रिकॉर्ड (कृषि अभिलेख) रखने में आने वाली बाधाओं का पता लगाने के लिए उत्तर प्रदेश के सीतापुर जिले में 120 किसानों का एक सर्वेक्षण किया गया। इस सर्वेक्षण में 50.0 प्रतिशत सीमांत, 33.3 प्रतिशत अतिलघु, एवं 16.7 प्रतिशत लघु किसान सम्मिलित थे।

सर्वेक्षण की मुख्य बिन्दु -

- आय-व्यय के रिकॉर्ड सबसे ज़्यादा रखे जाते थे, हालाँकि 60% से ज़्यादा सीमांत किसानों ने कोई औपचारिक रिकॉर्ड न होने की बात कही।
- मध्यम किसान अपेक्षाकृत जागरूक हैं—लगभग 70% ने आय-व्यय तथा मजदूरी के हिसाब का रिकार्ड रखा था ।
- फसल उत्पादन, पशुपालन तथा भूमि उपयोग का रिकार्ड बहुत कम किसानों ने रखा था ।
- प्रमुख बाधाओं में जागरूकता की कमी (61.7%), निरक्षरता/निम्न साक्षरता स्तर (56.7%), और अपर्याप्त प्रशिक्षण (46.7%) शामिल थे, जबकि मध्यम किसानों ने समय की कमी, लोकल भाषा में उचित प्रारूप उपलब्धता की कमी, और रिकॉर्ड की जटिलता पर ज़ोर दिया ।
- इस सर्वेक्षण से पता चला कि अधिकांश किसान, खासकर छोटे और सीमांत, आज भी रिकार्ड रखने की आदत नहीं डाल पाए हैं।

फार्म रिकॉर्ड रखने में मुख्य बाधाएँ-

सर्वेक्षण और अन्य अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ कि किसानों के सामने कई समस्याएँ हैं, जिनमें से प्रमुख निम्न हैं-

1. **जानकारी एवं जागरूकता की कमी** – अधिकतर सीमांत और छोटे किसान यह नहीं जानते कि रिकॉर्ड रखने से क्या लाभ हो सकता है।
2. **अशिक्षा, कम शिक्षा का स्तर** – शिक्षा का स्तर भी कम होने के कारण वे फार्म रिकॉर्ड अपनाने में हिचकते हैं।
3. **प्रशिक्षण का अभाव** - अधिकाश किसानों को यह पता कि किस प्रकार से सरल भाषा एवं तरीके से खेती का हिसाब-किताब रखा जाए। परिणामस्वरूप वे सही प्रारूप और तकनीक से परिचित नहीं हैं।
4. **उपयुक्त प्रारूप या डिजिटल टूल्स की कमी –** प्राय: किसानों के पास सरल रजिस्टर, पुस्तिका या मोबाइल ऐप्स उपलब्ध नहीं हैं, जिनसे वे आसानी से डेटा दर्ज कर सकें।
5. **पारंपरिक तरीका** – ज्यादातर पुराने किसान ढर्रे पर चलते हुए केवल याददाश्त पर निर्भर रहते हैं। इससे खर्च और आय का सटीक अनुमान नहीं लगा पाते है।
6. **समय की कमी** – कुछ किसानों का कहना है कि कृषि कार्यों में इतना समय लग जाता है कि रिकॉर्ड भरने का समय निकालना कठिन हो जाता है।
7. **तत्काल लाभ न दिखना** – कुछ किसानों का मानना है कि हिसाब-किताब लिखने से फसल के उत्पादन या आमदनी में तत्काल वृद्धि नहीं होती है, इसलिए वे इसे फार्म रिकॉर्ड को कम वरीयता देते हैं।
8. **फार्म रिकॉर्ड की जटिलता** - किसानों को लगता है कि रिकॉर्ड-कीपिंग एक कठिन और बोझिल काम है, जिसमें बहुत सारे कॉलम और विवरण लिखने पड़ते हैं।

फार्म रिकॉर्ड रखने के लाभ-

फार्म रिकॉर्ड से किसानों को विभिन्न प्रकार लाभ प्राप्त हो सकते है जिनमें कुछ प्रमुख इस प्रकार है -

- **वित्तीय नियोजन–** आय-व्यय पर नज़र रखने में मदद करता है, जिससे वित्तीय निर्णयों को भलीभांति लिया जा सकता है ।
- **लागत पर नियंत्रण** – बीज, खाद, मजदूरी आदि जैसे खर्च साफ़ तौर पर दर्ज रहते हैं जिसके फलस्वरूप फसलों की लागत पर आसनी से नियंत्रण रखा जा सकता है ।
- **उत्पादन निगरानी एवं निर्णय लेने में सहायक** – इनपुट -आउटपुट के रिकॉर्ड भविष्य के निर्णयों का मार्गदर्शन करते हैं । कौन-सी फसल ज्यादा मुनाफ़ा दे रही है यह फार्म रिकॉर्ड बनाने से पता चलता है।
- **अगामी सीजन की योजना** – पिछले आंकड़ों के आधार पर उचित निर्णय लेकर अगामी सीजन की योजना में सुधार किया जा सकता है ।

फार्म रिकॉर्ड ना रखने की हानियाँ –

प्राय: फार्म रिकॉर्ड ना रखने या खराब रिकॉर्ड-कीपिंग से निम्न हानियाँ का सामना करना पड़ता है-

- **उचित लाभ एवं हानि पर नज़र रखने में समस्या –** जब किसान अपने खेत के खर्च और आय का हिसाब नहीं रखते, तो यह पता नहीं चलता कि किस फसल से लाभ हो रहा है और किससे हानि। नतीजतन, वे बार-बार घाटे वाली फसल उगाते रहते हैं ।
- **दीर्घकालिक योजना के लिए आँकड़ों का अभाव –** पिछले वर्षों के खर्च तथा उत्पादन के आंकड़े न होने से किसान भविष्य की योजना ठीक से नहीं बना पाते है । जैसे – कौन-सी फसल किस मौसम में ज़्यादा मुनाफ़ा दे रही है या किस इनपुट पर कितना खर्च होता है ।
- **वैज्ञानिक कृषि पद्धतियों को अपनाने में कमी –** वैज्ञानिक खेती में हर निर्णय डेटा पर आधारित होता है। फार्म रिकॉर्ड न होने से किसान यह तय नहीं कर पाते कि उन्हें

किस तकनीक या किस किस्म का बीज अपनाना चाहिए। इससे उनकी उत्पादकता और दक्षता कमी आती है।

- **उचित वित्तीय निर्णयों को लेने में समस्या –** जब किसान अपने खेत की लागत और आमदनी का सही रिकॉर्ड नहीं रखते, तो वे यह नहीं समझ पाते कि किस फसल में उन्हें मुनाफ़ा हुआ और किसमें घाटा। परिणामस्वरूप, वे सही वित्तीय निर्णय जैसे – किस फसल में निवेश करना है, कितनी खाद या बीज खरीदनी है, या अगले सीजन में कितना पूँजी लगानी है – तय नहीं कर पाते । इसके अलावा, ऋण, फसल बीमा या सरकारी योजनाओं का लाभ लेने के लिए भी आय-व्यय तथा उत्पादन का प्रमाण माँगा जाता है । बिना रिकॉर्ड के किसान इन लाभकारी सुविधाओं से वंचित हो जाते हैं जिससे उनकी वित्तीय प्रगति रुक जाती है।

निष्कर्ष-

फार्म रिकॉर्ड रखना किसानों के लिए कोई अतिरिक्त बोझ नहीं बल्कि लाभ और प्रगति का साधन है। "आज का हिसाब–किताब ही कल की बेहतर योजना है।" जब किसान अपने खेत की लागत, उत्पादन और आमदनी का नियमित हिसाब रखते हैं, तो वे न केवल अनावश्यक खर्च कम करते हैं बल्कि संसाधनों का बेहतर उपयोग भी कर पाते हैं। इससे बचत बढ़ती है तथा मुनाफ़ा दोगुना हो जाता है। सीमांत व छोटे किसानों के लिए जागरूकता, प्रशिक्षण तथा स्थानीय भाषा में आसान डायरी, फॉर्मेट और सरल डिजिटल ऐप्स की उपलब्धता बेहद ज़रूरी है । यदि हर किसान डायरी रखने लगे, तो खेती न केवल टिकाऊ बल्कि अधिक लाभकारी भी हो जाएगी।